(सरकारी गजट उत्तर प्रदेश भाग-4 में प्रकाशित)
*सचिव, माध्यमिक शिक्षा परिषद्, उ०प्र०, प्रयागराज की विज्ञप्ति संख्या परिषद्–**9/989**,*
*के सातत्य में **शैक्षिक सत्र 2020-21** के लिए स्वीकृत नवीनतम पाठ्यक्रम पर*
आधारित एकमात्र पाठ्य-पुस्तक

संस्कृत

कक्षा-11

- चन्द्रापीडकथा (पूर्वार्द्ध भाग)
- रघुवंशमहाकाव्यम् (द्वितीयः सर्गः)
- अभिज्ञानशाकुन्तलम् (चतुर्थोऽङ्कः)
- पत्र लेखन
- अलंकार
- व्याकरण

व्याख्याकार

व्याख्याकार
डॉ० रमेश कुमार उपाध्याय
एम०ए० (हिन्दी, संस्कृत), पी-एच० डी०
भूतपूर्व साहित्य विभागाध्यक्ष,
हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयागराज

परामर्शदाता
डॉ० तारिणीश झा
व्याकरणवेदान्ताचार्य
भूतपूर्व पुराण विभागाध्यक्ष,
हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयागराज

माध्यमिक शिक्षा परिषद्, उ० प्र०, प्रयागराज द्वारा
स्वीकृत पाठ्यक्रम पर आधारित

संस्करण 2020-21

प्राक्कथन

संस्कृत भाषा भारतीय साहित्य की अमूल्य निधि है इसीलिए इसे देववाणी की संज्ञा दी गयी है। इसे ध्यान में रखते हुए माध्यमिक शिक्षा परिषद्, उत्तर प्रदेश, प्रयागराज ने कक्षा-11 संस्कृत के लिए चर्चित एवं जनप्रिय तीन पुस्तकें निर्धारित की हैं। क्रमानुसार ये पुस्तकें हैं—चन्द्रापीडकथा (पूर्वार्द्ध भाग), रघुवंशमहाकाव्यम् (द्वितीयः सर्गः), अभिज्ञानशाकुन्तलम् (चतुर्थोऽङ्कः)। विद्यार्थियों की सुविधा को देखते हुए उपर्युक्त कृतियों को एक पुस्तक का स्वरूप दिया गया है।

बाणभट्ट द्वारा रचित 'चन्द्रापीडकथा' संस्कृत गद्य साहित्य की सर्वश्रेष्ठ रचना है। बाणभट्ट की इस कृति के माध्यम से कथामुख प्रकरण को सरल रूप में प्रस्तुत किया गया है।

महाकवि कालिदास की प्रसिद्ध कृति 'रघुवंशमहाकाव्यम्' (द्वितीय सर्ग) को पाठ्यक्रम में रखा गया है। इसे सरल एवं बोधगम्य रूप में प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है। अनुपम सूक्तियों से परिपूर्ण सर्वगुणसम्पन्न इसकी रचना अत्यन्त चमत्कारिणी और मनोहारिणी है।

'काव्येषु नाटकं रम्यं तत्र रम्या शकुन्तला' इस कथन के आधार पर 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' को सर्वश्रेष्ठ नाटक माना गया है। यह महाकवि कालिदास की सर्वश्रेष्ठ कृति है। 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' के चतुर्थ अंक को सरल एवं बोधगम्य रूप में प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है।

छात्र-छात्राओं के अध्ययन की सुविधा की दृष्टि से प्रत्येक रचनाकारों का जीवन-परिचय, शैली, कृतियों की कथावस्तु, श्लोकों एवं गद्यावतरणों का हिन्दी अनुवाद, हिन्दी व्याख्या, संस्कृत व्याख्या एवं शब्दार्थ आदि दिये गये हैं। सम्पूर्ण कृतियों से उद्धृत सूक्तियों को भी प्राथमिकता दी गयी है। इसके अतिरिक्त अतिलघु उत्तरीय एवं बहुविकल्पीय प्रश्नों का भी पूर्ण समावेश है।

प्रस्तुत संस्करण की रचना विशेषतः विद्यार्थियों को ध्यान में रखकर की गयी है और मुझे पूर्ण विश्वास है कि यह उनके अध्ययन में अधिकाधिक सहायता प्रदान करेगी।

—व्याख्याकार

माध्यमिक शिक्षा परिषद्, उत्तर प्रदेश, प्रयागराज द्वारा 2020-21 की परीक्षा के लिए निर्धारित

नवीन पाठ्यक्रम

संस्कृत

कक्षा-11

सामान्य निर्देश

संस्कृत विषय में 100 अंकों का एक प्रश्न-पत्र होगा। प्रश्न-पत्र के प्रत्येक खण्ड में निर्धारित अंकों के अन्तर्गत दीर्घ उत्तरीय, लघु उत्तरीय, अतिलघु उत्तरीय एवं बहुविकल्पीय प्रश्नों का समावेश कर कई प्रश्न पूछे जायेंगे। प्रश्न-पत्र में प्रश्नों के लिए निर्धारित अंक ही उत्तर के आकार की संक्षिप्तता या दीर्घता का द्योतक होगा। प्रत्येक प्रश्न-पत्र के अन्तर्गत समाविष्ट पाठ्यक्रम का अंक विभाजन निम्नवत् होगा—

खण्ड-क (गद्य) — **20 अंक**

चन्द्रापीडकथा (पूर्वार्द्ध भाग)

1.	गद्यांश के आधार पर प्रश्नोत्तर।	10
2.	कथात्मक पात्रों का चरित्र-चित्रण (हिन्दी में, अधिकतम 100 शब्द)।	4
3.	रचनाकार का जीवन-परिचय एवं गद्यशैली (हिन्दी अथवा संस्कृत में, अधिकतम 100 शब्द)।	4
4.	सन्दर्भित पुस्तक से सम्बन्धित वैकल्पिक प्रश्न।	2

खण्ड-ख (पद्य) — **20 अंक**

रघुवंशमहाकाव्यम् (द्वितीयः सर्गः – प्रारम्भ से श्लोक संख्या 40 तक)

1.	किसी श्लोक की सन्दर्भ सहित हिन्दी में व्याख्या।	2+5=7
2.	किसी श्लोक की सन्दर्भ सहित संस्कृत में व्याख्या।	2+5=7
3.	कवि-परिचय एवं काव्य-शैली (हिन्दी अथवा संस्कृत में, अधिकतम 100 शब्द)	4
4.	काव्यगत तथ्यों एवं भावों पर आधारित वैकल्पिक प्रश्न।	2

खण्ड-ग (नाटक) — **20 अंक**

अभिज्ञानशाकुन्तलम् (चतुर्थोऽङ्कः – प्रारम्भ से लेकर पद्य संख्या 10 तक)

1.	पाठगत नाटक के किसी गद्यांश अथवा पद्य की सन्दर्भसहित हिन्दी में व्याख्या।	2+5=7
2.	पाठगत नाटक के अंशों से सूक्तिपरक पंक्ति की सन्दर्भसहित हिन्दी में व्याख्या।	2+5=7

3. कालिदास का जीवन-परिचय एवं नाट्यशैली 4
(हिन्दी अथवा संस्कृत में अधिकतम 100 शब्द)।
4. सन्दर्भित नाटक पर आधारित वैकल्पिक प्रश्न। 2

खण्ड-घ (पत्र लेखन) **06 अंक**

मित्र या सम्बन्धियों को पत्र, प्रार्थनापत्र आदि।

खण्ड-ङ (अलंकार) **04 अंक**

निम्नलिखित अलंकारों की सामान्य परिभाषा (हिन्दी या संस्कृत में)
अथवा उदाहरण संस्कृत में–अनुप्रास एवं यमक।

खण्ड-च (व्याकरण) **30 अंक**

1. अनुवाद – हिन्दी वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद। 8
2. कारक तथा विभक्ति 4
3. समास 4
4. सन्धि अथवा सन्धि-विच्छेद, नामोल्लेख, नियम 4
5. शब्दरूप 4
6. धातुरूप 4
7. प्रत्यय 2

निर्धारित पुस्तकें एवं पाठ्यवस्तु

खण्ड-क (गद्य)

महाकविबाणभट्टप्रणीतम्–कादम्बरीसारतत्त्वभूतम् 'चन्द्रापीडकथा' का पूर्वार्द्ध भाग–आसीत् पुरा शूद्रको नाम राजा..... सर्वरमणीयकानाम् एकनिवासभूताम्, कादम्बरीं ददर्श।

खण्ड-ख (पद्य)

महाकविकालिदासप्रणीतम्–रघुवंशमहाकाव्यम् (द्वितीय सर्ग) प्रारम्भ से श्लोक संख्या 40 तक।

खण्ड-ग (नाटक)

महाकविकालिदासप्रणीतम्–अभिज्ञानशाकुन्तलम् (चतुर्थोऽङ्कः) प्रारम्भ से लेकर पद्य संख्या 10 तक।

खण्ड-घ (पत्रलेखन)

मित्र या सम्बन्धियों को पत्र, प्रार्थनापत्र आदि।

खण्ड-ङ (अलंकार)

निम्नलिखित अलंकारों की सामान्य परिभाषा (हिन्दी या संस्कृत में) अथवा उदाहरण संस्कृत में–अनुप्रास एवं यमक।

खण्ड-च (व्याकरण)

1. **अनुवाद–**

हिन्दी वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद।

2. कारक तथा विभक्ति–

निम्नलिखित सूत्रों तथा वार्तिकों के आधार पर कारकों तथा विभक्तियों का ज्ञान–

(क) प्रथमा विभक्ति (कर्ता कारक)

(1) स्वतंत्रः कर्त्ता।

(2) प्रातिपदिकार्थलिंगपरिमाणवचनमात्रे प्रथमा।

(ख) द्वितीया विभक्ति (कर्म कारक)

(1) कर्तुरीप्सिततमं कर्म।

(2) कर्मणि द्वितीया।

(3) अकथितं च।

(4) अधिशीङ्स्थासां कर्म।

(5) अभितः परितः समयानिकषाहाप्रतियोगेऽपि। (वा0)

(6) कालाध्वनोरत्यन्तसंयोगे।

(ग) तृतीया विभक्ति (करण कारक)

(1) साधकतमं करणम्।

(2) कर्तृकरणयोस्तृतीया।

(3) सहयुक्तेऽप्रधाने।

(4) पृथग्विनानानाभिस्तृतीयाऽन्यतरस्याम्।

(5) येनाङ्गविकारः।

3. समास–

निम्नलिखित समासों का ज्ञान, परिभाषा तथा संस्कृत में विग्रहसहित उदाहरण–तत्पुरुष, कर्मधारय, बहुव्रीहि।

4. सन्धि–सन्धि, सन्धिविच्छेद, नामोल्लेख तथा नियम।

निम्नलिखित सूत्रों के अनुसार संधियों का उदाहरण सहित ज्ञान।

स्वरसन्धि–(1) इको यणचि, (2) एचोऽयवायावः, (3) आद्गुणः, (4) वृद्धिरेचि, (5) अकः सवर्णे दीर्घः, (6) एङि पररूपम्, (7) एङःपदान्तादति।

5. शब्दरूप–निम्नलिखित संज्ञा शब्दों का रूप–

(अ) पुल्लिंग– राम, हरि, गुरु, पितृ, भगवत्, करिन्, राजन्, पति, सखि, विद्वस्, चन्द्रमस्।

(आ) स्त्रीलिंग– रमा, मति, नदी, धेनु, वधू, वाच्, सरित्, श्री, स्त्री, अप्।

6. धातुरूप–दसों लकारों का सामान्य ज्ञान तथा निम्नलिखित धातुओं के लट्, लङ्, लोट्, विधिलिंग एवं लृट् में रूप।

परस्मैपद–भू, पठ्, पा, गम्, दृश्, स्था, नी, अस्, नश्, आप्, शक्, इष्, प्रच्छ्, कृष् के रूप।

7. प्रत्यय–क्तिन्, क्त्वा, ल्यप्, शतृ, शानच्, तुमुन्, यत्।

टिप्पणी–संस्कृत देवनागरी लिपि में लिखी जायेगी।

●●

विषय-सूची

विषय — पृष्ठ-संख्या

खण्ड - 'क' (गद्य)

चन्द्रापीडकथा (पूर्वार्द्ध भाग)

- महाकवि बाणभट्ट : संक्षिप्त परिचय **9**
- चन्द्रापीडकथा : कथा-सार **12**
- चन्द्रापीडकथा : चरित्र-चित्रण **13**
- चन्द्रापीडकथा **19**
  (पूर्वार्द्ध भाग : शब्दार्थ, हिन्दी अनुवाद, व्याकरणात्मक टिप्पणी एवं प्रश्नोत्तर)
- अतिलघु उत्तरीय प्रश्न **81**
- बहुविकल्पीय प्रश्न **83**

खण्ड -'ख' (पद्य)

रघुवंश-महाकाव्यम्- (द्वितीयः सर्गः)

- महाकवि कालिदास : एक संक्षिप्त परिचय **88**
- रघुवंश महाकाव्य : एक संक्षिप्त परिचय **92**
- रघुवंश महाकाव्यम् (द्वितीय सर्ग) का सारांश **103**
- रघुवंश महाकाव्यम् (द्वितीयः सर्गः) **104**
- अतिलघु उत्तरीय प्रश्न **125**
- बहुविकल्पीय प्रश्न **127**

खण्ड - 'ग' (नाटक)

अभिज्ञानशाकुन्तलम् (चतुर्थोऽङ्कः दशं श्लोकपर्यन्तः)

- महाकवि कालिदास **130**
- चतुर्थ अङ्क का सारांश **132**

- प्रमुख पात्रों का चरित्र-चित्रण **133**
- अभिज्ञानशाकुन्तलम् (चतुर्थोऽङ्कः) **138**
- सूक्तिपरक वाक्यों की सन्दर्भ सहित व्याख्या **156**
- अतिलघु उत्तरीय प्रश्न **160**
- बहुविकल्पीय प्रश्न **162**

खण्ड - 'घ'

- पत्र-लेखन **167**

खण्ड - 'ङ'

- अलंकार **176**

खण्ड - 'च' (व्याकरण)

1. अनुवाद : हिन्दी वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद **177**

2. कारक तथा विभक्ति **198**

बहुविकल्पीय प्रश्न **203**

3. समास **206**

4. सन्धि **213**

बहुविकल्पीय प्रश्न **217**

5. शब्द-रूप **222**

बहुविकल्पीय प्रश्न **228**

6. धातु-रूप **233**

बहुविकल्पीय प्रश्न **244**

7. प्रत्यय **248**

बहुविकल्पीय प्रश्न **250**

- प्रतिदर्श प्रश्न-पत्र **254**

●●